RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.02 | February 2022 | pp. 14-19
Double-Blind Peer Reviewed/ Refereed Journal

Buddhist Art Center of Bihar
बिहार के बौद्ध कला केन्द्र

*Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

Abstract

Mahatma Buddha took birth in Lumbini, Nepal and spread Buddhism in Uttar Pradesh and Bihar. The remains of Buddhist architecture in the form of stupas, chaityas and Bihar are spread over the states of Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Bihar, Maharashtra and Andhra Pradesh in the form of Buddhist art centers of India. The state of Bihar has been the abode of Buddha. Bodh Gaya situated here is famous for the Buddha's enlightenment. Among the famous Buddhist art centers of Vihara state, Laurianandangarh, Rajgir, Nalanda, Bodh Gaya and Vaishali are the main ones.

Keywords: *Laurianandangarh, Rajgir, Nalanda, Bodhgaya, Vaishali*

Abstract in Hindi

महात्मा बुद्ध ने नेपाल स्थित लुम्बिनी में जन्म लेकर उत्तर प्रदेश तथा बिहार में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। स्तूप, चैत्य तथा बिहार के रूप में बौद्ध स्थापत्य के अवशेष बौद्ध कला केन्द्रों के रूप में भारत वर्ष के उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र तथा आन्ध्रप्रदेश राज्यों में फैले हुए हैं। बिहार राज्य बुद्ध की विहार स्थल रही है। यहाँ स्थित बोधगया बुद्ध की सम्बोधि के कारण प्रसिद्ध है। विहार राज्य प्रसिद्ध बौद्ध कला केन्द्रों में लौरियानन्दनगढ़, राजगीर, नालन्दा, बोधगया तथा वैशाली मुख्य हैं।

Keywords: *लौरियानन्दनगढ़, राजगीर, नालन्दा, बोधगया, वैशाली।*

Article Publication

Published Online: 20-Feb-2022

***Author's Correspondence**

Dr. Shobharam Dubey

Assistant Professor, Department of Sanskrit, B. S. Educational Girls College, Sitapur

dr.dubey80@gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i02.003

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

बिहार राज्य बुद्ध की विहार स्थल रही है। यहाँ स्थित बोधगया बुद्ध की सम्बोधि के कारण प्रसिद्ध है। विहार राज्य प्रसिद्ध बौद्ध कला केन्द्रों में लौरियानन्दनगढ़, राजगीर, नालन्दा, बोधगया तथा वैशाली मुख्य हैं।

लौरियानन्दनगढ़ :–

बिहार के चम्पारन जिले में बेतिया से 16 मील उत्तर पश्चिम में $26^0 59'$ उत्तरी अक्षांश तथा $84^0 24'$ पूर्वी देशान्तर पर लौरियानन्दनगढ़ स्थित है।[1] यहाँ अशोक का कए शिला स्तम्भ है, जिसके शीर्ष पर सिंह की मूर्ति है। इस पर ब्राह्मी में लेख उत्कीर्ण है।[2] इस स्तम्भ का व्यास नीचे 35'' तथा ऊपर 22'' हैं इसकी लम्बाई $32'9\frac{1}{2}$` है।[3] बुद्ध के समय वृजिनगढ की नगरी इसी स्थान पर थी।[4] जिसके खण्डर यहाँ दिखाई देते है। वृज्जियों के आठ गोत्र थे। इसमें से बुलियों की राजधानी इस स्थान पर थी। धम्मपद की टीका में बुलि राज्य का उल्लेख अल्लकप्प राज्य के रूप में हुआ है। जहाँ यह बताया गया है कि, यह राज्य मात्र 30 मील लम्बाई में था।[5] इस राज्य के राजाओं के बारे में प्राप्त विवरण से पता चलता है कि, इनका वेठद्वीपक राजाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था। अतः यह माना जा सकता है कि, वेढद्वीप अल्लकप्प से अधिक दूर नहीं था।[6] फ्लीट के

1 देवला मिश्रा– बुद्धिस्ट मान्यूमेंट, पृ0 83
2 विजयेन्द्र कुमार माथुर– ऐतिहासिक स्थानावली, पृ0 823
3 राजकिशोर सिंह–भारत के प्राचीन स्मारक, पृ0 11
4 विजयेन्द्र कुमार माथुर– पूर्वोक्त, पृ0 823
5 हावर्ड ओरियण्टल सीरीज, 28, पृ0 247
6 हेमचन्द्र राय चौधरी–प्रा0भा0रा0 इति0, पृ0 145

अनुसार वेठद्वीप चम्पारन जिले का बेतिया है।[7] 1862 ई0 में अलेक्जेण्डर कनिंघम ने सर्वप्रथम इस स्थल की खोज की। 1903 ई0 में टी0 ब्लॉक महोदय ने यहाँ उत्खनन करवाया।[8] 1935–36 ई0 में एन0जी0 मजूमदार महोदय ने इस स्थल पर पुनर्परीक्षण किया।[9] यहाँ पर 20 टीलों या ढूहों की तीन कतारे हैं। जिनमें मुख्य पूरब से पश्चिम तथा अन्य दो एक दूसरे के समानान्तर उत्तर से दक्षिण में फैली है।[10] लौरियानन्दनगढ़ के शव टीलों को वैदिक युग से सम्बन्धित बताते हुए सम्राट उत्तानपाद के शमशान चैत्य कहा जाता है।[11] शुक्ल यजुर्वेद के एक मन्त्र[12] में निर्देश है कि, समाधि के चारो ओर मिट्टी का ऊंचा टीला बनाया जाय। शतपथ ब्राह्मण[13] में शमशान चैत्य गोल अथवा चौकोर बनाने का निर्देश है। लौरियानन्दनगढ़ का स्तूप 23′ ऊंचा है और इसका निर्माण तीन चरणों में हुआ है। यहाँ पर खुदाई में स्वर्ण पत्र पर निर्मित एक नारी आकृति मिली है। जिसकी तुलना मातृदेवी से की जाती है।[14] कनिंघम का अनुमान है कि , इन शव टीलों का काल 1500ई0पू0 से 600 ई0पू0 के मध्य होना चाहिए।[15] लौरियानन्दनगढ़ में स्तूप परम्परा के आरम्भिक स्वरूप के दर्शन होते हैं।[16]

राजगीर :–

बिहार राज्य में पटना जिले में 25°2′ उत्तरी अक्षांश तथा 85°26′ पूर्वी देशान्तर पर राजगीर स्थित है।[17] मगध के हर्यंकवंशीय राजा बिम्बिसार ने मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज के निकट राजगृह नामक नई राजधानी बसाई थी।[18] रामायण में केकय देश की राजधानी का नाम भी गिरिव्रज मिलता है।[19] इसे केकय की राजधानी से भिन्न बताने के लिए मगध का गिरिव्रज कहते हैं।[20] रामायण के अनुसार यह पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ था और इसे वसु नामक राजा ने बसाया था।[21] महाभारत काल में गिरिव्रज मगध नरेश जरासन्ध की राजधानी थी।[22] मगध नरेश जरासन्ध ने श्रीकृष्ण के ऊपर आक्रमण करने के लिए अपनी गदा को 99 बार घुमा कर गिरिव्रज से 99 योजन दूर मथुरा की ओर फेंका था।[23] राजगृह के निकट ही जरासन्ध की बैठक नाम से बारादरी स्थित है, जो महाभारत कालीन बताई जाती है।[24] महाभारत के वनपर्व में राजगृह का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि,'' **ततो राजगृहं गच्छेत् तीर्थसेवी नाराधिप''[25]** सौन्दरानन्द में कपिलवस्तु की तुलना गिरिव्रज से की गई है।[26] प्राचीन भारतीय साहित्य में राजगृह के मगधपुर, बार्हप्रथपुर, बिंबिसारपुरी, वसुमती आदि नाम मिलते है।[27] मंगल जातक में उल्लेख है कि राजगृह मगध देश में स्थित था।[28] पालि ग्रन्थों में गृघ्रकूट, गौतम–न्यग्रोध, चौर प्रयात, सप्तपर्णि गुहा, कालशिला, शीतबन, सर्वशौण्डिक, प्राग्भार तयोदाराम, वेणुबन स्थित कलंदक तडाग, जीवन का आम्रवन, मद्रकुक्षि तथा मृगवन वे स्थल है जो महात्मा बुद्ध से सम्बन्धित है। इनमें से कुछ स्थलों के खण्डहर आज भी राजगीर में देखे जा सकते है।[29] बुद्धचरित में गौतम का गंगापार करके राजगृह जाने का वर्णन है।[30] भास रचित स्वप्नवासवदत्ता नामक ग्रन्थ में राजगृह का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि,'' **श्रुति विशेषणार्थ वत्सभूमौ लावणकं के नाम ग्रामस्तत्रोषितवानस्मि।''** अर्थात 'महोदय सुनिए मैं राजगृह से आ रहा हूँ। मैं वेद विद्या में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए वत्स भूमि में अवस्थित

---

[7] जर्नल आफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, 1906, पृ0 900
[8] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, एनुअल रिपोर्ट, 1935–36, पृ0 55
[9] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, एनुअल रिपोर्ट, 1935–36, पृ0 4
[10] पृथ्वी कुमार अग्रवाल –पूर्वोक्त, पृ0 99
[11] राजकिशोर सिंह –पूर्वोक्त, पृ0 11
[12] यजुर्वेद – 35, 15
[13] शतप्रथ ब्राह्मण– 13, 8, 1, 5
[14] वासुदेव उपाध्याय –पूर्वोक्त, पृ0 21
[15] पृथ्वी कुमार अग्रवाल –पूर्वोक्त, पृ0 79
[16] कृष्ण देव–पूर्वोक्त, पृ0 89
[17] देवला मिश्रा– पूर्वोक्त, पृ071
[18] विजयेन्द्र कुमार माथुर– पूर्वोक्त, पृ0 779
[19] रामायण – 2, 68, 22
[20] सेक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट, 13, पृ0 150
[21] रामायण– 1, 32, 7
[22] महाभारत –सभा पर्व, 14, 63
[23] वही –सभा पर्व 19, 23
[24] विजयेन्द्र कुमार माथुर– पूर्वोक्त, पृ0 779
[25] महाभारत –वन पर्व, 84, 104
[26] सौन्दरानन्द–1, 42
[27] विजयेन्द्र कुमार माथुर– पूर्वोक्त, पृ0 289
[28] जातक सं0– 87
[29] विजयेन्द्र कुमार माथुर– पूर्वोक्त, पृ0 779–80
[30] बुद्धचरित– 10, 10

लावणक गाँव में रहता है।[31] वाल्मीकि रामायण में राजगृह के वसुमती नाम का उल्लेख करते हुए सुमागधी नामक नदी तथा पाण्डर , विपुल, वाराहक, चैत्यक और मातंग नामक पॉच पहाड़ियों का उल्लेख है।[32] महाभारत में इन पहाड़ियों के नाम विपुल, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक मिलते है।[33] साहित्य में इन पहाड़ियों के नाम सेगार, पाण्डव, वेपुल्ल, गिज्झकूट तथा इसिगिलि मिलते हैं।[34] चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत भ्रमण के समय उसने बताया कि मगध की प्राचीन राजधानी का नाम कुशाग्रपुर था। इसे चारों ओर से तुंग पर्वत मालांए घेरे हुई थी। इस नगर का घेरा 150 मी0 था। नगर के मध्य में एक गढ़ था। जिसके आकार के चिन्ह 30 मी0 के घेर में दिखाई पड़ते थे।[35] नगर के उत्तर में विशाल सिंह द्वारा था, उत्तर पूर्व में गृद्धकूट पर्वत था, सप्तपर्णी गुफा पश्चिम में पडती थी, यहां पर अशोक का बनवाया एक स्तूप है।[36] ह्वेनसांग राजगृह में दर्शन और पूजा करके इन्द्रशील गुहा गया, जो राजगृह से पूर्व दिशा में 30 ली पर पड़ता था। पर्वत के पूर्वी ढाल पर हंस नामक हीनयानियों का संघाराम था।[37] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने 1905–06 ई0 में उत्खनन कार्य करवाया।[38] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने 1953–54 जीवक के आम्रवन में उत्खनन करवाया था।[39] वर्ष 1954–55 में डॉ0 डी0आर0 पाटिल ने इस उत्खनन को जारी रखा।[40] वर्ष 1957–58 श्री ए0सी0 बैनर्जी ने उत्खनन कार्य को आगे बढ़ाया।[41] वर्ष 1958–59 में डॉ0 के0सी0 पाणिग्रही तथा ए0सी0 बैनर्जी ने उत्खनन कार्य जारी रखा।[42] वर्ष 1961–62 ई0 में रघुवीर सिंह ने राजगीर में उत्खनन जारी रखा, उन्हें उत्खनन में दुर्ग प्राचीर के अवशेष मिले।[43] वर्ष 1962–64 ई0 में रघुवीर सिंह ने उत्खनन कार्य को जारी रखा उन्हें उत्खनन में तीन विभिन्न सांस्कृतिक कालों के अवशेष मिले।[44] वर्ष 1974–75 ई0 में श्री विजयकान्त मिश्र महोदय ने राजगीर में उत्खनन कार्य करवाया।[45] राजगीर में हुए इन पुरातात्विक कार्यो के फलस्वरूप राजगीर में अजातशत्रु का स्तूप, शिलाघटित महाप्राकार, वेणवन, जरासन्ध की बैठक, सप्तपर्णि गुफा, गिद्धकूट, जरासन्ध का अखाड़ा जीवक का आम्रवन तथा सोन भण्डार गुफा आदि स्थल प्रकाश में आए।[46]

<u>नालन्दा :–</u>

बिहार राज्य के जिले में $25^{0}8'$ उत्तरी अक्षांश नालन्दा तथा $85^{0}27'$ पूर्वी देशान्तर पर नालन्दा स्थित है।[47] बौद्ध स्थल नालन्दा के अवशेष बड़गांव के निकट स्थित है, जो बिहार शरीफ के जिला मुख्यालय से 12 कि0मी0 दक्षिण, राजगीर से 11 कि0मी0 उत्तर तथा पटना से 90 कि0मी0 दक्षिण–पूर्व में स्थित है।[48] नालन्दा के इतिहास का आरम्भ ईसापूर्व छठी–पांचवी शताब्दी से होता है। जैन ग्रन्थों के अनुसार नालन्दा उस समय राजगृह के निकट 'बाहिरिया' नाम से प्रसिद्ध था।[49] बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि, अपने पर्यटन के लिए बुद्ध प्राय यहां आते थे। इसमें 'पावारिक' नाम का एक आमों का बाग भी था। राजगृह से इसकी दूरी एक योजन थी।[50] राजगृह के पास एक दूसरा स्थल नाल था, यह महासुदस्सन जातक के अनुसार यह बुद्ध के प्रिय शिष्य शारिपुत्र का जन्म स्थान था। दूसरे ग्रन्थों में इसका नाम नालक ग्राम मिलता है।[51] महावस्तु में उल्लेख है कि, नालन्दा ग्राम शरिपुत्र का जन्म स्थान तथा राजगृह से मात्र आधा योजन दूर था।[52] इस उल्लेख का समर्थन तिब्बती लेखक तारानाथ भी करता है।[53] चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार बुद्ध अपने पूर्व जन्म में बोधिसत्व के

---

31 स्वप्नवासवदत्तम–पृ0 133
32 रामायण– 1, 32, 8–10
33 महाभारत –सभा पर्व, 21, 2
34 ए गाइड टू राजगीर, पृ0 1
35 ह्वेनसांग की भारत यात्रा पृ0 128
36 वही पृ0– 120–121
37 वही पृ0– 123
38 वाई0डी0शर्मा–पूर्वाक्त पृ0–60
39 इण्डियन आर्कियोलॉजी 1953–54 ए रिव्यू, पृ0 9
40 वही– 1954–55, पृ0–16
41 वही– 1957–58, पृ0–11
42 वही– 1958–59, पृ0–13
43 वही– 1961–62, पृ0–6–8
44 वही– 1962–66, पृ0–5
45 वही– 1974–75, पृ0–10
46 राज किशोर सिंह–पूर्वोक्त, पृ0 7–8
47 देवला मिश्रा– पूर्वोक्त, पृ0 85
48 अमलानन्द घोष–नालन्दा, पृ0 1
49 वही –पृ0–2
50 प्रेसीडिग्स, आफ दि फिफ्थ ओरियन्टल कॉन्फरेंस (लाहौर, 1930)
51 वी0सी0ला–जियोग्राफी अर्ली बुद्धिज्य, लन्दन, 1932
52 अमलानन्द घोष– वही, पृ0 2–3
53 एफ0ए0 शाइफनर–तारानाथ ज में शिस्टे डेज बुद्विज्यस इन इण्डीज, पृ0 65

रूप में इस प्रान्त के राजा थे और उनकी दानवीरता के कारण उनकी राजधानी नालन्द या नालन्दा के नाम से प्रसिद्ध हुई।[54] तारानाथ के अनुसार मौर्य सम्राट अशोक ने ईसा पूर्व तीसरी शती में शारिपुत्र के चैत्य के आगे भेंट चढ़ाई थी। यह चैत्य यहां पहले से विद्यमान था। अशोक ने यहां मन्दिर भी बनवाया था। अतः वह अशोक ही था जिसने सर्वप्रथम नालन्दा विहार की नींव रखी थी।[55] दूसरी शती ई0 के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं रसायनज्ञ नागार्जुन की शिक्षा नालन्दा के विश्वविद्यालय में ही हुई थी और अन्त में यहां का प्रधान आचार्य बन गया। नागार्जुन के समकालीन सुविष्णु नामक ब्राह्मण ने हीनयान और महायान सम्प्रदाय के लिए नालन्दा में 108 मन्दिर बनवाए।[56] चौथी शती ई0 में बौद्ध धर्म की माध्यमिक शाखा के दार्शनिक आर्यदेव भी नालन्दा के आचार्य थे।[57] पांचवी शर्ती ई0 में योगाचार शाखा के दार्शनिक असंग ने यहां 12 वर्ष व्यतीत किए तथा उनका भाई बसुबन्धु नालन्दा का प्रधान आचार्य बना।[58] यहां हुई खुदाई से समुद्रगुप्त का कूट ताम्रपत्र तथा कुमारगुप्त का सिक्का मिला है।[59] ह्वेनसांग बताता है कि, ''इस स्थान को शक्रादित्य नाम के एक राजा ने पहले शुभ शकुन के कारण संधाराम बनाने के लिए चुना था। बाद में उसके वंश के बुद्धगुप्त, तथागतगुप्त, नरसिहगुप्त बालादित्य और वज्र नाम के राजाओं ने इसके आसपास संघाराम बनवाए।[60]

नालन्दा के संधाराम कुमार गुप्त–। और उनके बाद के गुप्त राजाओ ने बनवाए थे।[61] चीनी यात्री फाहियान के अनुसार ''यहां नालो नामक एक ग्राम है यहाँ शारिपुत्र का जन्म और मरण हुआ था और इस स्थान पर एक स्तूप भी है।[62] ह्वेनसांग ने नालन्दा में 80 फुट ऊंची तांबे की बुद्धमूर्ति देखी थी। जिसे छठी शताब्दी ई0 के आरम्भ में सम्राट अशोक के वंशज अन्तिम राजा पूर्ण वर्मन ने स्थापित किया था।[63] हर्ष नालन्दा के भिक्षुओं का बहुत सममान करता था और स्वयं को उनका दास कहता था।[64] ह्वेनसांग बताता है कि, ''राजाओं की कई पीढ़ियों ने यहां निर्माण कार्य जारी रखा और कुशल शिल्पियों तथा कलाकारी की सेवाओं के उचित प्रयोग से अद्भुत वस्तुओं का स्वरूप देखने में आया।[65] ह्वेनसांग के अनुसार नालन्दा में महायान और हीनयान सम्प्रदायों के ग्रन्थ, हेतुविद्या (न्याय), शब्दविद्या (व्याकरण), चिकित्साविद्या (आयुर्वेद), वेद तथा अन्य हिन्दू धर्म के शास्त्र पढ़ाए जाते थे।[66] नालन्दा में ह्वेनसांग का भारतीय नाम मोक्षदेव था। उसके चले जाने पर चिरकाल तक नालन्दा निवासी उसे इसी नाम से स्मरण करते थे। उसके लौट जाने के बाद प्रज्ञादेव नामक भिक्षु ने उसे वस्त्रों का एक जोड़ा भेजा था।[67] 673 ई0 में इत्सिंग भारत पहुँचा। उसके अनुसार नालन्दा के भिक्षुओं की संख्या तीन हजार से अधिक थी। इनका भरण पोषण राजाओं द्वारा दान में दिए हुए दो सौ से अधिक गांवों की आमदनी से होता था।[68] पाल वंश के शासकों ने आठवीं से बारहवीं सदी तक शासन किया। वे महायान धर्म के संरक्षक थे। उन्होंने विक्रम शिला, सोमपुर, ओदन्तपुरी तथा जागद्दल बिहार बनवाए थे।[69] तारानाथ के अनुसार इस समय नालन्दा विक्रमशिला बिहार के अध्यक्ष के अधीन था।[70] मुसलमान इतिहासकार मिनहाज के अनुसार मुहम्मद बख्तियार ने पश्चिमी बिहार के एक शहर पर अचानक आक्रमण करके नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इस शहर के लोग जिसे विहार कहते थे और यह स्थान विद्यापीठ था।[71] यह शहर सम्भवतः नालन्दा ही था। तारानाथ ने लिखा है कि, तुर्को ने मगध को जीतकर संघारामों को नष्ट कर दिया। नालन्दा में विनाश काण्ड किया और इस आतंक से भयभीत होकर सब भिक्षु दूसरे देशों में भाग गए।[72]

---

[54] एस0 बील–बुद्धिस्ट रिकार्ड आन द वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग–2, पृ0–167
[55] एफ0ए0 शाइफनर वही, पृ0 65
[56] वही, पृ0 69
[57] वही, पृ0 83
[58] अमलानन्द घोष– वही, पृ0 2–3
[59] एफ0ए0 शाइफनर वही, पृ0 122
[60] एस0 बील–वही, पृ0–167
[61] अमलानन्द घोष– वही, पृ07
[62] लेग्गे– ट्रेवेल्स ऑफ फाहियान, पृ0 61
[63] एस0 बील–वही, भाग–2, पृ0–118
[64] वही, पृ0 160
[65] वही, पृ0 177
[66] अमलानन्द घोष– वही, पृ0 2–3
[67] बील वही, पृ0 27
[68] जे0तकुसु–ए रिकार्ड आफ द बुद्धिस्ट रिलीजन, पृ0154
[69] एफ0ए0 शाईफनर, वही, पृ0 217
[70] वही, पृ0 218
[71] तबकात–ए–नासिरी, पृ0 552
[72] एफ0ए0 शाईफनर, वही, पृ0 94

1915–16 ई0 से लेकर लगभग 20 वर्षो तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने उत्खनन कार्य करवाया। इससे नालन्दा के स्मारक प्रकाश में आए।[73] यहां के स्मारकों में मुख्य मन्दिर स्थल–3 संघारम स्थल 1ए और 1 बी, संघाराम स्थल–1, संघाराम स्थल–4, संघाराम स्थल–5, संघाराम स्थल–6, संघाराम स्थल–7, संघाराम स्थल–8, संघाराम स्थल–9,संघाराम स्थल–10, संघाराम स्थल–11, संघाराम स्थल–12, संघाराम स्थल–13, संघाराम स्थल–14, मन्दिर स्थल–2, मुख्य हैं।[74]

नालन्दा के आस पास के क्षेत्रों से बुद्ध मूर्ति, मरीचि की मूर्ति, बड़गाँव में स्थापित सूर्य, विष्णु, शिव–पार्वती, अवलोकितेश्वर आदि की मूर्तियां मुख्य हैं।[75] स्वतंत्रता के बाद 1975–76 ई0 में श्री विजयकान्त मिश्र के निर्देशन में उत्खनन कार्य हुआ।[76] वर्ष 1979–80 ई0 में श्री रवीन्द्र सिंह विष्ट ने उत्खनन करवाया।[77] वर्ष 1981–82 ई0 में श्री एच0 के0 नारायण ने उत्खनन करवाया।[78] वर्ष 1982–83 में एच0के0 नारायण के निर्देशन में उत्खनन कार्य जारी रहा। इन उत्खननों के फलस्वरूप बिहार संरचना के अवशेष मिले जिसकी ईटें 30 X 23 X 5 से0मी0 माप की है। सूर्य की मूर्ति, ध्यानी बुद्ध की मूर्ति, गरुड की मूर्ति, पत्थर के मनके तथा उत्तरी चमकीली पात्र परम्परा के अवशेष मिले।[79]

बोधगया :–

बिहार राज्य के गया जिले में 2442 उत्तरी अक्षांश तथा 85 पूर्वी देशान्तर पर बोधगया स्थित है।[80] वायु पुराण के अनुसार इसका नाम 'गय' नामक असुर के नाम पर रखा गया। गय एक बड़ा विष्णु भक्त था तथा कोलाहल पर्वत पर इसने कठोर तप किया था। विष्णु के वर के प्रताप से इसके दर्शन मात्र से स्वर्ग मिल जाता था। यह सबको घूम–घूमकर स्वर्ग न भेज दे इसलिए ब्रह्मा ने इसके शरीर पर यज्ञ करने का निश्चय किया। इसे अचल करने के लिए सभी देवता इसके ऊपर गढ़ गए।[81] मत्स्य पुराण[82] ब्रह्माण्ड पुराण[83], तथा वायु पुराण[84] के अनुसार यह राजर्षि गय की राजधानी थी। उन्होंने यहॉ पर यज्ञ किया और ब्रह्मसर नामक तालाब बनवाया। धर्मपृष्ठ, बह्मपृष्ठ तथा गृद्धघट यहां के प्रमुख स्थल है। परशुराम ने यहां श्राद्ध किया था। भागवत पुराण में उल्लेख है कि, बलराम जी ने यहां पिण्डदान किया था।[85]

यही वह स्थान है जाँ पर महात्मा बुद्ध को सम्बोधि प्राप्त हुई थी।[86] सम्राट अशोक को जब पता चला तो उसने यहां पर बोधिघर का निर्माण करवाया था। नीचे बुद्ध का आसन था, जिसके चारों ओर महाबोधि विहार था।[87] महावंस के अनुसार बोधिगया के निकट बोधिमण्डल नामक बिहार था। यहाँ से तीन सहस्त्र भिक्षुओं को लेकर स्थाबिर चित्रगुप्त सिंहल देश गए थे।[88] शुंगकाल अथवा उसके बाद बोधिवृक्ष के पास बोधगया का मन्दिर बना। इस मन्दिर में एक जगह राजा इन्द्रमित्र और ब्रह्ममित्र की रानियों के नाम मिलते हैं ये शुंगो के समन्त थे।[89] बोधगया की वेदिका पर खुदे हुए चित्र शुंगकालीन कला का उदाहरण है। एक चित्र में चार घोड़े वाला सूर्य का रथ बना है। एक अन्य चित्र अनाथ पिण्डक द्वारा जेतवन खरीदने का है।[90] यहाँ से गुप्त संवत 269 का एक अभिलेख मिला है, जो सम्भवतः सिंहल देश के बौद्ध नरेश महानाम का है।[91] बोधगया बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थो में से एक है। वर्ष 2002 ई0 में यूनेस्कों ने महाबोधि मन्दिर को विश्व धरोहर

---

[73] ए0 घोष–वही, पृ0 17
[74] वही, पृ0 18–34
[75] वही, पृ0 18–34
[76] इण्डियन आर्कियोलॉजी 1975–76 ए रिव्यू, पृ0 8
[77] वही, 1979–80, पृ0 14
[78] वही, 1981–82, पृ0 12
[79] वही, पृ0 25
[80] देवला मिश्रा– पूर्वोक्त, पृ0 60
[81] वायु पुंराण–105, 4–46
[82] मत्स्य पुराण– 12,17
[83] ब्रह्माण्ड पुराण– 3, 13, 104
[84] वायु पुंराण–85, 19
[85] भागवत पुंराण–10, 79, 11
[86] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 648
[87] राज किशोर सिंह–वही, पृ0 19
[88] महावंश– 29, 41
[89] राज किशोर सिंह–पूर्वोक्त, पृ0 19
[90] वही, पृ0 20
[91] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 648

स्मारकों की सूची में सम्मिलित किया गया है।[92] यहाँ पर प्रसिद्ध बोधिवृक्ष है जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।[93] महाबोधि मन्दिर का जीर्णोद्धार 19वीं शताब्दी ई0 में अलेक्जेण्डर कनिंघम द्वारा 1883 ई0 में किया गया।[94]

वैशाली :–

वैशाली बिहार राज्य के वैशाली जनपद में 25^0 99′ उत्तरी अक्षांश तथा $85^0$13′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित बसाड नामक स्थल है।[95] बाल्मीकि रामायण में इस नगरी का उल्लेख विशाला नाम से हुआ है।[96] इस नगरी का संस्थापक अलंवुषा नामक अप्सरा से उत्पन्न इक्ष्वाकु का पुत्र राजा विशाल था।[97] श्री राम तथा लक्ष्मण ने विशाला पहुँच कर एक रात्रि के लिए विशाल के पुत्र सुमति का आतिथ्य ग्रहण किया था।[98] विष्णु पुराण में विशाल को तृणबिन्दु तथा अलंवुषा का पुत्र बताया है।[99] गौतम बुद्ध के समय तथा पहले यह लिच्छवि गणराज्य की राजधानी थी।[100] वज्जियों की न्यायप्रियता की बुद्ध ने बड़ी सराहना की है। इस गणराज्य में कथित अपराधी का अपराध सिद्ध करने के लिए विनिश्चय महापात्र, व्यवहारिक, सूत्रधार, अष्टकुलिक, सेनापति, उपगणपति तथा गणपति क्रमिक विचार करके अपराध सिद्ध होने पर पावेण पुस्तक के अनुसार दण्ड देते थे।[101] वैशाली के चारो ओर चार प्रसिद्ध चैत्य थे। पूर्व में उदयन, दक्षिण में गौतमक, पश्चिम में सप्ताभ्रक, तथा उत्तर में बहुपुत्रक नामक चैत्य थे। अन्य चैत्यों के नाम कोरमट्टक तथा चापाल चैत्य थे। चापाल चैत्य पर ही बुद्ध ने आनंद को बताया था कि, तीन महीने बाद मेरे जीवन का अन्त हो जाएगा।[102] एक पण्ण जातक में उल्लेख है कि, वैशाली के चारो ओर तीन भित्तियाँ थी, जिनके बीच एक कोस की दूरी थी। नगरी में तीन सिंहद्वार थे जिन पर प्रहरी पहरा देते थे।[103] वैशाली में प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली का विशाल प्रसाद और उद्यान था। उसने भगवान बुद्ध का शिष्यों सहित आतिथ्य सत्कार किया था और भगवान बुद्ध ने उसे सद्धर्म की दीक्षा दी थी।[104] बुद्ध को वैशाली निवासियों से बड़ा प्रेम था उन्होंने यहां के गण प्रमुखों को देवों की उपमा दी थी।[105] अन्तिम समय में वैशाली से कुशिनारा आते समय बुद्ध ने आनन्द से कहा कि–,'' आनन्द तथागत इस सुन्दर नगरी का अब दर्शन नहीं कर सकेंगे।[106] जैनों के अन्तिम तीर्थकर महावीर वैशाली के ही राजकुमार थे।[107] महावंश के अनुसार वैशाली के निकट बालुकाराम नामक उद्यान था।[108] विनय पिटक में उल्लेख है कि, गणिका आम्रपाली जो अपनी सुन्दरता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध थी, उसने इस नगर को समृद्ध बनाने में बड़ी मदद की थी।[109] चीनी यात्री फाह्यान तथा ह्वेन सांग के यात्रा विवरणों का उपयोग करके अलेक्जेण्डर कनिंघम ने 1861 ई0 में वैशाली के बसाढ में इसकी खोज की।[110] वैशाली से एक अशोक काल का एकारमक स्तम्भ, प्राचीन मन्दिर के अवशेष, किले के अवशेष तथा डॉ0 ए0एस0 अल्तेकर को 1957–58 ई0 में एक स्तूप के अवशेष मिले जिसका व्यास 7.5 मी है।[111] वैशाली में पटना विश्वविद्यालय ने 1957 –58 और 1961–62 में उत्खनन कार्य करवाया। वर्ष 1957–58 ई0 में के0पी0 जयसवालय रिसर्च इन्स्टीट्यूट के अन्तर्गत डा0 अनन्त सदाशिव अल्तेकर ने राजा विशाल का गढ़ के अवशेष खोज निकाले।[112] वर्ष 1961–62 में डा0 ए0एस0 अल्तेकर ने इसे जारी रखा। चतुर्मुख महादेव मन्दिर के निकट उत्खनन में इस स्थल की प्राचीनता उत्तर कृष्ण मार्जित पात्र परम्परा काल तक जाती है।[113]

---

[92] डिसीजन अडोप्टेड बाई द 26 सेशन आफ द बर्ल्ड हैरिटेज कम टी, पृ0 62
[93] मदन गोपाल, के0एस0 गौतम (सं0) इण्डिया थ्रू द ऐबेस, पृ0 176
[94] देवला मिश्रा– पूर्वोक्त, पृ0 61
[95] जाय बिण्डलॉस, सरीना सिंह–इण्डिय : लोनली प्लेनेट गाईड, पृ0 556
[96] वाल्मीकि रामायण– 1,45,10
[97] वही – 1, 45
[98] वही – 1, 47, 17
[99] विष्णु पुराण – 4, 1, 49
[100] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 863
[101] वही – 881–82
[102] वही – 882
[103] जातक सं0– 149
[104] बुद्धचरित–22
[105] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 882
[106] बुद्धचरित–25, 34
[107] विजयेन्द्र कुमार माथुर– वही, पृ0 882
[108] महावंस– 4, 150, 4, 63
[109] विनय पिटक– 1, 268
[110] विन्सेन्ट स्मिथ–जनरल आफ द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी (1907),पृ0 267
[111] कृष्णदेव वही, पृ0 89
[112] इण्डियन आर्कियोलॉजी 1975–58 ए रिव्यू, पृ0 10
[113] वही –1961–62, पृ0 5